Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि का अध्ययन

रवि सैनी
शोधार्थी, अपेक्स विश्वविद्यालय
डॉ. कल्पना सेंगर
शोध पर्यवेक्षक, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप अत्यंत प्रतिस्पर्धात्मक हो गया है। विद्यालयी शिक्षा के साथ-साथ कोचिंग संस्थान विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण सहायक साधन के रूप में उभर रहे हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कोचिंग संस्थानों के प्रति बढ़ती अभिरूचि का अध्ययन करना है। अध्ययन में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि विद्यार्थी किस प्रकार से कोचिंग संस्थानों को अपनी शैक्षणिक सफलता का आधार मानते हैं तथा किन कारणों से उनकी कोचिंग संस्थानों के प्रति रुचि बढ़ रही है।

मुख्य शब्द: कोचिंग संस्थान, अभिरूचि, उच्च माध्यमिक विद्यार्थी, शिक्षा, प्रतिस्पर्धा

भूमिका

वर्तमान युग को यदि प्रतिस्पर्धा का युग कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज शिक्षा का प्रत्येक स्तर प्रतिस्पर्धा और उत्कृष्टता की माँग करता है। विद्यार्थी सफलता प्राप्त करने के लिए न केवल विद्यालयी शिक्षण पर निर्भर हैं, बल्कि अतिरिक्त सहायक साधनों की खोज में भी रहते हैं। इसी क्रम में कोचिंग संस्थानों का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। कोचिंग संस्थान विद्यार्थियों को परीक्षा की दृष्टि से तैयार करने, कठिन विषयों को सरल बनाने, अवधारणाओं की गहन समझ प्रदान करने और प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं में सफलता हेतु विशेष प्रशिक्षण देने का कार्य करते हैं।

विद्यालयों में दी जाने वाली औपचारिक शिक्षा अक्सर समय, संसाधन या व्यक्तिगत ध्यान की सीमाओं से बंधी होती है। इसके विपरीत, कोचिंग संस्थान विद्यार्थियों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन, नियमित परीक्षण, संदेह समाधान तथा परिणामोन्मुख शिक्षा प्रदान करते हैं। यही कारण है कि विद्यार्थी इन संस्थानों की

ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। आज लगभग प्रत्येक शहर, कस्बे और यहाँ तक कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी कोचिंग संस्थानों का जाल फैल चुका है।

यह प्रवृत्ति न केवल शिक्षा के व्यवसायीकरण की ओर संकेत करती है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि विद्यार्थी अब परीक्षा में सफलता को शिक्षा का अंतिम लक्ष्य मानने लगे हैं। कोचिंग संस्थानों के प्रति बढ़ती अभिरूचि के पीछे कई सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और मनोवैज्ञानिक कारण निहित हैं — जैसे अभिभावकों की अपेक्षाएँ, उच्च अंकों की होड़, विद्यालयों में सीमित संसाधन, प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में चयन की चिंता, तथा सफल विद्यार्थियों की प्रेरक कहानियाँ।

आज का विद्यार्थी यह मानने लगा है कि कोचिंग के बिना सफलता पाना कठिन है। यह धारणा धीरे-धीरे शिक्षा जगत में एक सामाजिक प्रवृत्ति के रूप में स्थापित हो रही है। अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों की इस बढ़ती अभिरूचि के वास्तविक कारणों, प्रभावों और परिणामों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि कोचिंग संस्थान विद्यार्थियों की शैक्षणिक गुणवत्ता को सुदृढ़ कर रहे हैं या उन्हें केवल परीक्षा-केंद्रित बना रहे हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

आधुनिक युग में शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखना एक गंभीर चुनौती बन गई है। विद्यालयी शिक्षा के समानांतर कोचिंग संस्थानों की बढ़ती लोकप्रियता इस बात की ओर संकेत करती है कि औपचारिक शिक्षा प्रणाली में कुछ ऐसी खामियाँ या सीमाएँ हैं जिनके कारण विद्यार्थी वैकल्पिक मार्ग अपनाने को बाध्य हो रहे हैं। कोचिंग संस्थान विद्यार्थियों को अल्प समय में परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने की दिशा में तैयार करते हैं, परंतु यह भी देखा गया है कि यह प्रवृत्ति विद्यार्थियों के ऊपर मानसिक दबाव और तनाव को बढ़ा रही है। विद्यालयों में प्राप्त शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण विकास होता है, जबकि कोचिंग संस्थानों का लक्ष्य मुख्यतः परीक्षा में सफलता प्राप्त करना होता है। इस कारण विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार, चिंतन शैली तथा शिक्षण की दिशा में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। कोचिंग के बढ़ते प्रभाव से यह प्रश्न उठता है कि क्या विद्यार्थी ज्ञानार्जन के उद्देश्य से अध्ययन कर रहे हैं या केवल परीक्षा परिणामों पर केंद्रित हो गए हैं। इसके अतिरिक्त, अभिभावक भी अपने बच्चों की सफलता की कामना में उन्हें कोचिंग संस्थानों में भेजने के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे शिक्षा एक प्रतिस्पर्धात्मक व्यवसाय का

रूप ले रही है। इस संदर्भ में यह अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, ताकि यह समझा जा सके कि विद्यार्थियों की कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि शैक्षणिक गुणवत्ता को सुदृढ़ कर रही है या केवल परीक्षा-उन्मुख दृष्टिकोण को बढ़ावा दे रही है। अतः इस अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाएगा कि कोचिंग संस्थानों की ओर विद्यार्थियों का आकर्षण किन कारणों से बढ़ रहा है, इसका उनके अध्ययन व्यवहार, आत्मविश्वास, तनाव स्तर तथा शैक्षणिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। इस प्रकार यह शोध शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रासंगिक और समसामयिक अध्ययन सिद्ध होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना।
3. लिंग, विद्यालय प्रकार तथा निवास क्षेत्र (शहरी/ग्रामीण) के आधार पर अभिरूचि में अंतर का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि में लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध की विधि एवं प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा। इस अध्ययन की जनसंख्या राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को माना गया है। न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यपरक विधि द्वारा किया

जाएगा। अध्ययन में आंकड़ों के संकलन के लिए एक स्वनिर्मित अभिरूचि परीक्षण उपकरण का उपयोग किया जाएगा, जो विद्यार्थियों की अभिरूचि को मापने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया जाएगा, जिनमें मध्यमान, प्रमाप विचलन, तथा टी-परीक्षण (t-test) प्रमुख हैं। इन सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से आंकड़ों की तुलना, व्याख्या और निष्कर्षों की सार्थकता का परीक्षण किया जाएगा, जिससे शोध के परिणामों की विश्वसनीयता, वस्तुनिष्ठता और प्रामाणिकता सुनिश्चित की जा सके।

परिकल्पना 1: "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि में लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी – 1: लिंग के आधार पर कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि का तुलना परिणाम

समूह	N	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t-मूल्य	सार्थकता स्तर (p)	निष्कर्ष
पुरुष विद्यार्थी	100	72.45	8.62	1.28	0.20	असार्थक
महिला विद्यार्थी	100	70.88	9.14			

व्याख्या:

सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों के कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि के मध्यमान में बहुत कम अंतर पाया गया, जो सांख्यिकीय रूप से असार्थक ($p > 0.05$) है। इसका अर्थ यह है कि विद्यार्थियों की कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि लिंग पर निर्भर नहीं है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रतिस्पर्धा की तीव्रता और सफलता की आकांक्षा ने दोनों लिंगों को समान रूप से प्रभावित किया है। लड़के और लड़कियाँ दोनों ही बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन और भविष्य की संभावनाओं को सुदृढ़ करने के लिए कोचिंग संस्थानों की ओर समान रूप से आकर्षित हैं। यह परिणाम यह भी इंगित करता है कि शिक्षा का क्षेत्र अब लिंग-भेद से परे जाकर समान अवसरों की दिशा में अग्रसर है, जहाँ कोचिंग संस्थान सभी विद्यार्थियों को समान रूप से प्रभावित कर रहे हैं।

आरेख – 1: लिंग के आधार पर कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि का तुलना परिणाम

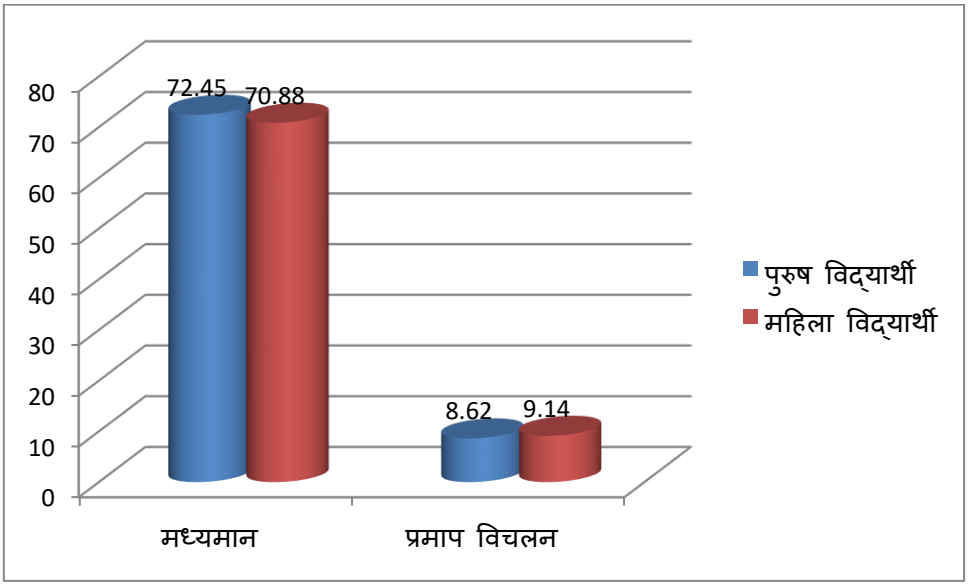

परिकल्पना 2: "शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी – 2: निवास क्षेत्र के आधार पर कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि का तुलना परिणाम

समूह	N	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t-मूल्य	सार्थकता स्तर (p)	निष्कर्ष
शहरी विद्यार्थी	100	74.12	8.25	1.54	0.12	असार्थक
ग्रामीण विद्यार्थी	100	71.93	9.07			

व्याख्या:

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के अभिरूचि के मध्यमान में जो अंतर पाया गया, वह सांख्यिकीय रूप से असार्थक ($p > 0.05$) है। यह इंगित करता है कि आज के युग में कोचिंग संस्थानों का प्रभाव केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित नहीं है। शिक्षा के डिजिटलीकरण, परिवहन सुविधाओं के विस्तार तथा ग्रामीण क्षेत्रों में भी कोचिंग संस्थानों की बढ़ती उपलब्धता ने इस अंतर को कम कर दिया है। ग्रामीण विद्यार्थी भी अब उतने ही जागरूक और महत्वाकांक्षी हैं जितने शहरी विद्यार्थी। दोनों ही समूह यह समझ चुके हैं कि प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं में सफलता हेतु अतिरिक्त तैयारी आवश्यक है, और यही कारण है कि दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों में कोचिंग

के प्रति समान अभिरूचि देखी गई। यह परिणाम यह भी संकेत करता है कि शिक्षा का शहरी-ग्रामीण अंतर धीरे-धीरे घट रहा है और कोचिंग संस्थान इस सेतु को जोड़ने का कार्य कर रहे हैं।

आरेख – 2: निवास क्षेत्र के आधार पर कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि का तुलना परिणाम

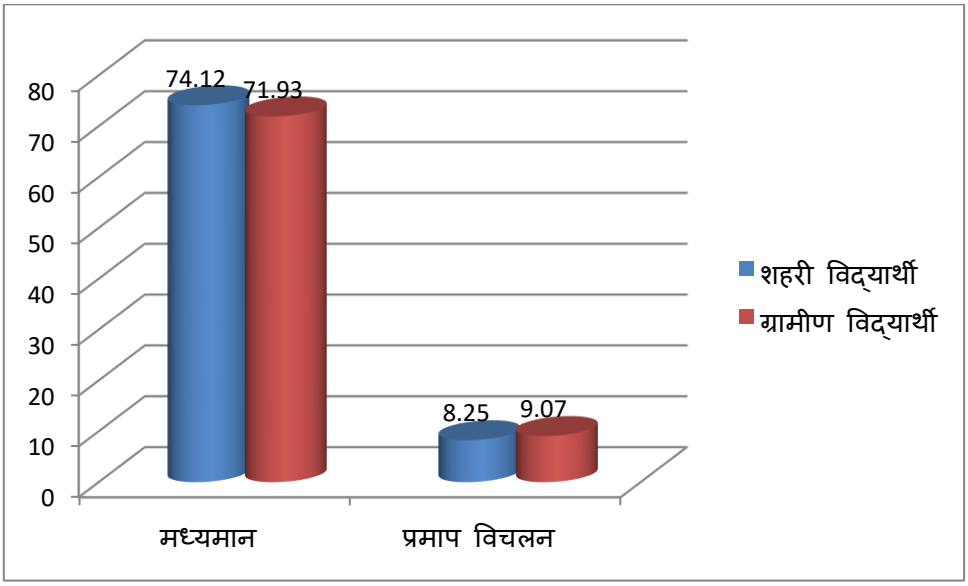

परिकल्पना 3: "राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारणी – 3: विद्यालय प्रकार के आधार पर कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि का तुलना परिणाम

समूह	N	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t-मूल्य	सार्थकता स्तर (p)	निष्कर्ष
राजकीय विद्यालय विद्यार्थी	100	69.75	9.48	1.09	0.28	असार्थक
निजी विद्यालय विद्यार्थी	100	71.62	8.94			

व्याख्या:

सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पाया गया कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिरूचि के औसत स्कोर में जो अंतर देखा गया, वह सांख्यिकीय रूप से असार्थक ($p > 0.05$) है। यह इंगित करता है कि विद्यालय के प्रकार का विद्यार्थियों की कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि पर कोई विशेष

प्रभाव नहीं है। आज के समय में शिक्षा का स्वरूप इतना प्रतिस्पर्धी हो गया है कि राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी भी निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तरह कोचिंग संस्थानों की आवश्यकता को महसूस करते हैं। यह प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि कोचिंग संस्थान अब सभी वर्गों के विद्यार्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी एवं आकर्षक बन चुके हैं। यह परिणाम यह भी संकेत देता है कि विद्यालयीय शिक्षा — चाहे वह राजकीय हो या निजी — विद्यार्थियों को अतिरिक्त अभ्यास और मार्गदर्शन की आवश्यकता से मुक्त नहीं कर पा रही है। इसलिए विद्यार्थी, विद्यालय के प्रकार से परे, कोचिंग संस्थानों पर समान रूप से निर्भर हैं।

आरेख – 3: विद्यालय प्रकार के आधार पर कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि का तुलना परिणाम

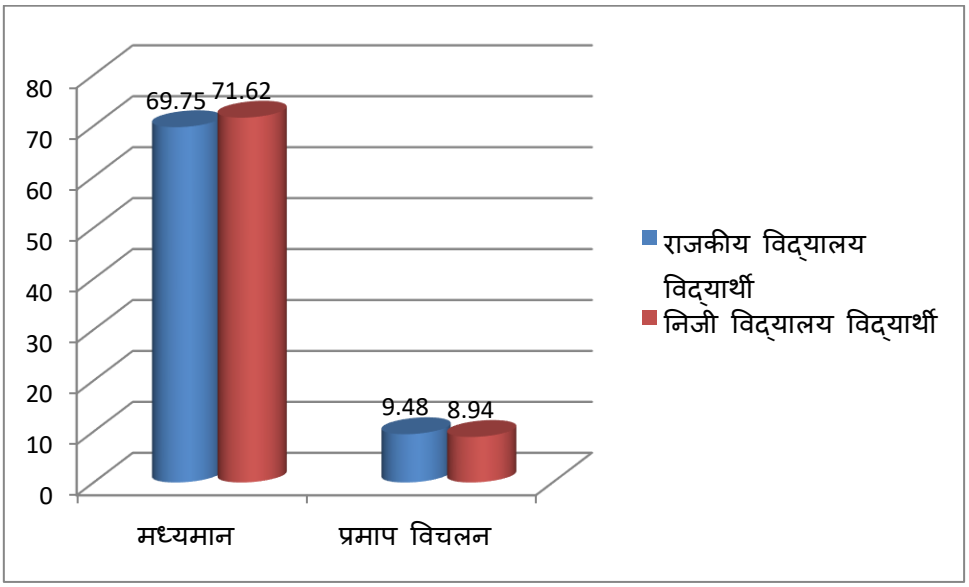

समग्र व्याख्या

सभी तीनों परिकल्पनाओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि लिंग, निवास क्षेत्र तथा विद्यालय प्रकार — तीनों ही चर विद्यार्थियों की कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करते। इसका अर्थ यह है कि कोचिंग संस्थानों के प्रति अभिरूचि एक सामान्य सामाजिक-शैक्षणिक प्रवृत्ति बन चुकी है, जो सभी विद्यार्थियों में समान रूप से विद्यमान है। चाहे विद्यार्थी पुरुष हो या महिला, शहरी हो या ग्रामीण, राजकीय विद्यालय में पढ़ता हो या निजी में — सभी के लिए कोचिंग संस्थान अब

शैक्षणिक सफलता की एक अनिवार्य आवश्यकता के रूप में उभर रहे हैं। यह निष्कर्ष वर्तमान शिक्षा प्रणाली के एक महत्वपूर्ण यथार्थ को उजागर करता है — कि विद्यार्थी अब विद्यालयी शिक्षा को पर्याप्त नहीं मानते, बल्कि कोचिंग को अपने शैक्षणिक विकास का पूरक मानते हैं।

सुझाव

1. **विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार:-** विद्यालयों को अपनी शिक्षण-पद्धति को अधिक विद्यार्थी-केंद्रित एवं परिणामोन्मुख बनाना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों की कोचिंग संस्थानों पर निर्भरता कम की जा सके।
2. **शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं संवेदनशीलता:-** शिक्षकों को नवीन शिक्षण विधियों, तकनीकी साधनों और व्यक्तिगत मार्गदर्शन की दृष्टि से नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, जिससे वे विद्यार्थियों की विविध शैक्षणिक आवश्यकताओं को विद्यालय स्तर पर ही पूरा कर सकें।
3. **अभिभावक जागरूकता कार्यक्रम:-** अभिभावकों को यह समझाना आवश्यक है कि कोचिंग सफलता का एकमात्र साधन नहीं है। उन्हें अपने बच्चों में आत्म-अध्ययन की प्रवृत्ति और आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
4. **विद्यालयों में अतिरिक्त सहायता कक्षाएँ:-** विद्यालयों में *रिमेडियल क्लासेस* या *अतिरिक्त सहायता सत्र* प्रारंभ किए जाएँ, ताकि जिन विद्यार्थियों को विषयगत कठिनाइयाँ हैं, उन्हें विद्यालय में ही समाधान मिल सके।
5. **शैक्षणिक तनाव में कमी:-** विद्यार्थियों पर परीक्षा के दबाव को कम करने हेतु विद्यालयों में *काउंसलिंग सेवाएँ* उपलब्ध कराई जानी चाहिए, ताकि वे मानसिक रूप से स्वस्थ रहकर अध्ययन कर सकें।
6. **कोचिंग संस्थानों का विनियमन:-** राज्य सरकार को कोचिंग संस्थानों की कार्यप्रणाली पर नियंत्रण एवं विनियमन हेतु स्पष्ट नीतियाँ बनानी चाहिए, जिससे शिक्षा के व्यवसायीकरण पर अंकुश लगाया जा सके।

7. **स्वाध्ययन एवं तकनीकी संसाधनों का उपयोग:-** विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, और शैक्षणिक ऐप्स के उपयोग के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, ताकि वे बिना अतिरिक्त कोचिंग व्यय के भी अपनी शिक्षा को सुदृढ़ बना सकें।

संदर्भ सूची

[1] शर्मा, आर. के. (2021). *भारतीय शिक्षा प्रणाली में कोचिंग संस्थानों की भूमिका.* जयपुर: राजस्थानी प्रकाशन।

[2] नागर, अनीता. (2022). *विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्तियों पर कोचिंग संस्थानों का प्रभाव.* अजमेर विश्वविद्यालय शोध पत्रिका।

[3] यादव, सीमा. (2023). *प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा और कोचिंग संस्कृति.* दिल्ली: नेशनल बुक हाउस।

[4] सिंह, अशोक कुमार. (2020). *भारतीय माध्यमिक शिक्षा में कोचिंग का विस्तार और प्रभाव.* वाराणसी: शिक्षा अध्ययन केंद्र।

[5] वर्मा, नीलम. (2021). *विद्यालयी शिक्षा और कोचिंग संस्थानों का तुलनात्मक अध्ययन.* राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

[6] Gupta, S. (2020). *A Study on the Increasing Role of Coaching Centres in Secondary Education.* Indian Journal of Educational Research, 45(2), 112–120.

[7] Mishra, P. & Tiwari, R. (2022). *Impact of Private Coaching on Students' Academic Achievement.* International Journal of Education and Development, 38(4), 85–94.